ओंकार श्री

जैनत्व हो तो अलबर्ट आइंस्टीन जैसा..

बीसवीं सदी के मानवतावादी भारतीय वैज्ञानिक डॉ० दौलतसिंह कोठारी, विनम्रता के सहज प्रतीक थे। उदयपुर के अपने निवास पर जीवन के अंतिम वर्षों में गाहे-बगाहे सांध्यबेला में, आध्यात्मिक विचारकों की गोष्ठी परम्परा निभाते रहे। गोष्ठी में डॉ० कोठारी, मुझे लगा मौन भाव से आध्यात्मिक ग्रंथ चर्चा के दौर में एक प्रशांत श्रावक के रूप में तलाशते थे विज्ञान व अध्यात्म के सम्यक् सूत्रों को।

डॉ कोठारी, प्रज्ञा सम्पन्न सतर्क जैन चिन्तक थे नितान्त संवेदनशील। एक दिन अल सबेरे प्रात: भ्रमण से लौटते भूपालपुरा स्थित मेरे किराये के मकान पर आ पहुँचे। मेरा आदर स्वीकारते हुए चाय-पान के दौरान मुझसे पूछ बैठे 'ओमजी' ॐ शब्द की आपकी व्याख्या सुनूं मैं? मैं अभिभूत भाव से बोल पड़ा–

ॐ तो बैठा है शांत भाव से ATOM के शब्दायतन तन में..

डॉ० कोठारी एटम में 'ओम' के वास स्थान की मेरी सूत्र व्याख्या सुन पुलकित होते बोले– ''काश मैं अलबर्ट आइंस्टीन महोदय की 'ओम' जिज्ञासा को शांत कर पाता इस तरह। मैं उत्साहित हो पूछ बैठा उनसे डा० सा० आपकी व आइंस्टीन महोदय की ऐतिहासिक भेंट के दौरान, जैन धर्म व दर्शन पर वार्ता प्रसंग चला? ''हाँ, उन्होंने (आइंस्टीन ने) थ्योरी ऑफ प्रोबेबिलिटी व रिलेटीविटी का जिक्र छेड़ते हुए जैन धर्म के स्याद्वाद के तालमेल का भावमय प्रतिपिादन कर भारतीय अध्यात्म के प्रति गहरी कृतज्ञता प्रगट की।''

जैन धर्म से बड़ा कोई विश्व धर्म नहीं :

डॉ० कोठारी ने मुझे बताया कि उक्त भाव व्यक्त किया, विश्व के महान भौतिकी वैज्ञानिक एवं अणु-शक्ति जनक आइंस्टीन ने १८ अप्रैल १९५५ के दिन प्रिंस्टन अस्पताल में अपना नश्वर शरीर त्यागने की कुछ घड़ी पहले, पास खड़ी एक परिचारिका से।''

बातों ही बातों में पता ही नहीं चला कि अरूणोदय हो चुका है। ''इस जैनाइंस्टीन चर्चा को अभी विराम! ''आज २६ मार्च है, आपका जन्म दिन। जय हो 'जैनोम' (जैन ओम) की।'' यह बोल डॉ० कोठारी चुपचाप चल दिए।

उदयपुर की एक ढलती सांझ। डॉ० कोठारी सांध्य भ्रमण से लौटते दिखे, एक तुड़ी मुड़ी देसी तड़ी टेकते। अपने भूपालपुरा स्थित बंगले के आगे मुझे प्रतीक्षारत देख मेरा अभिवादन स्वीकारते हुए सीधी सादी बनावट के बरामदे में मेरे साथ बैठे सील शर्बत पीते, डा० सा० बोले, ''हाँ, तो क्या विधि योग है कि आज मेरा जन्म दिन है और आज की उपनिषद में आत्मावान महान आइंस्टीन महोदय के बारे में आधे घंटे बतियायेंगे अपन।'' मैंने चर्चा सूत्र पकड़ा और जानना चाहा डा० सा० से आइंस्टीन महोदय के जैनोलॉजी के रूझान बाबत। डॉ० सा० बोले– यह सुखद रहस्य है कि आइंस्टीन महोदय ने जैन शास्त्रों के जर्मन अनुवादों का स्वाध्याय सापेक्षत सिद्धान्त सिद्धि की ओर बढ़ते, व्यस्त काल बेला में समय निकाला भी तो कैसे? एक बात बता दूं कि वे भले जैन न थे पर उनकी जैनत्व आस्था वाली धारणा थी बड़ी प्रबल। वे पक्के अपरिग्रही थे। एक ही साबुन से शेव, कपड़ों की धुलाई, उसी से कभी कभार स्नान करते थे। गिनती की कपड़ा जूता जोड़ी। एक छड़ी। एक घड़ी। एक रूमाल। अल्पाहारी। मितभाषी और पक्के शाकाहारी थे। धन जोड़ा नहीं। देना सीखा, जो अतिरिक्त है वो जरूरतमंदों का।

वीतरागी हो तो आइंस्टीन-सा :

मैंने डॉ० कोठारी की बात तन्मयता से सुनी और मुझसे पूछे बिना नहीं रहा गया कि ''सन् १९३२'' में, सुना है जर्मनी के एक जैन संस्थान को, अपनी ओर से एक बड़ी राशि समर्पित की थी, इसका पता आपको अवश्य होगा, प्रकाश डालें इस पर–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डॉ० कोठारी बोले– ऐसा है कि सन् ३२ में इन्स्टीच्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज संस्थान ने आइंस्टीन की सेवायें लेनी चाही। वेतन कितना लेंगी? वे बोले ३००० डालर इस भोली सदाशयता से प्रभावित हो इन्स्टीच्यूट मेनेजमेन्ट ने उन्हें १० गुणा वेतन दिया। आइंस्टीन तो ठहरे सम्पदा अपरिग्रही। उन्होंने अपनी वेतन राशि का एक बड़ा भाग जर्मनी की एक जैन संस्था को, जैन पांडुलिपियों के प्रकाशन व अनुवाद हेतु समर्पित कर दिया।

वे सिद्धान्तवादी वैज्ञानिक थे परीक्षण प्रयोगी सावधनी। व्यावहारिक जीवन में इन्होंने साधुमना जीवन जिया। वीतराग साधा। इससे बड़ा जैनत्व का प्रमाण और क्या?

डॉ० कोठारी समयपाल पक्के। भावुक स्वर में उक्त उद्‌गार प्रगट कर उन्होंने कहा बात चली है जैनत्व की तो कुछ और चलेगी। आज की वार्ता को यहीं दें आराम।

डॉ० कोठारी तो जन्मना से अधिक कर्मणा सिद्ध अपरिग्रही हुए भाव व्यवहार में पर उन्हें अपनी भौतिकी विज्ञान प्रशिक्षा व शोध की सात समंदर पार यात्रा में विश्व का महान अपरिग्रही विज्ञानी काल योगात डॉ० आइंस्टीन जैसा मिला जैनाइंस्टीन।

ताकि सनद रहे :

एक अस्तित्व वाद फ्रेंच साहित्यकार को नोबेल पुरस्कार एक आलू के बोरे से अधिक मूल्य का नहीं लगा। ज्यांपाल सार्त्र नामक स्वाभिमानी था वह रचनाकार पर उससे भी आगे निकला एक और नोबेल पुरस्कार विजेता विज्ञान धनी अलबर्ट आइंस्टीन। ये महोदय डायरी लिखते थे। पर उनको १९२१ में जो संदर्भित पुरस्कार (भौतिकी में) मिला उसकी टीप इन्होंने अपनी डायरी में मांडी तक नहीं, नही मित्रों को पत्र लिखा। ज्ञान, विज्ञान के इस कीर्तिमानशाली मनुष्य की आकिंचन्यता गवेषणीय, मननीय और अनुकरणीय है।

जब मैंने यह प्रेरक प्रसंग, बीकानेर के विश्व मान्य रसायनवेत्ता, डॉ० डी० एन पुरोहित से सुना तो मेरा मन वीतरागत्व की तह तक जा पहुँचा।

डॉ० डी० एस० कोठारी ने मुझे आइंस्टीन की जीवनी की एक पोथी दी। इस पोथी में एक रोचक प्रसंग पढ़ा। आइंस्टीन के एक गाढ़े मित्र थे लियोपोल्ड एनफील्ड। इन्होंने अपनी विज्ञानी मित्र को जैनागमों (जर्मन अनुवादित) के सूत्रों में कई बार तल्लीन देखा स्वाध्यायरत। एक दिन इसी मित्र ने मनोविनोद भाव से ही सही, पर युग सम्बोधन दे ही दिया – आइंस्टीन को 'हैलोमिस्टर जैन! की मधुर टेर के साथ।'

मैंने यह प्रसंग पढ़ा। पोथी बंद की और मेरी आत्मा गूंज उठी न आइंस्टीन अजैन रहा और न तू। बड़ा मूल्य है जैनत्व का।

काल पात्र के बोल :

डॉ० अलबर्ट आइंस्टीन नो, अमेरीकी काल-पात्र में रखने के लिए, अग्रत: सन्देश लिख भेजा।

''प्रिय भविष्यत्,

आप हमारे मुकाबिले अधिक मानवतावादी, न्यायप्रिय, शांतिकामी, तर्क संगत नहीं होंगे तो हमारे पर शैतान की मार अवश्य पड़ेगी।''

देश के जैनाजैन बन्धु इस सन्देश के एक-एक अक्षर की चेतना तलाशें।

संदर्भित काल-पात्र के बोल मैंने स्वर्गीय डा० डी० एस० कोठारी की एक स्फुट डायरी से नोट किये। मुझे आज भी यह नोट, विश्व शांति का 'प्रो नोट' प्रतीत होता है।

आइंस्टीन ने अपने जीवन काल में अणुशक्ति विश्व विनाशक तांडव हीरोशिमा व नागासाकी के प्राणी संहार में देखा, उनका दिल दहल उठा और यह बोलते-बोलते संसार से बिदा हो गया कि आगामी विश्वयुद्ध होगा तो आदमी पत्थरों से लड़ेगा।

अणु शक्ति के अमानवीय साम्राज्यवादी दुरुपयोग का ठीकरा इस महाविज्ञानी के सिर फोड़ने से नहीं चूका समय का क्रूर वाचक।

नहीं-नहीं, जैन दर्शन के निश्चय सत्य व व्यवहार सत्य का मर्म टटोला। सापेक्ष सत्य की रोशनी दी जगत को इस मानवतावादी विज्ञान मनीषी जैनत्वधारी ने पूरी विनय के साथ।

गुप्तेश्वर नगर, उदयुपर

■

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org